अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्
57 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

मो. – 9810900912 **4 / 1 / 2012**

प्रेस विज्ञाप्ति

गीता और गांधी के पुनःस्मरण से विश्व गुरू बनेगा भारत : न्यायमूर्ति लाहोटी

नई दिल्ली, 4 जनवरी। आजादी के 65 वर्षो बाद भी संविधान में प्रदत्त न्याय समता , स्वतंत्रता और अधिकार आम आदमियों को उपलब्ध नहीं कराए जा सके हैं। भारत में रामराज्य की परिकल्पना तभी सार्थक हो सकेगी जब प्रत्येक नागरिक को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक न्याय समान रूप से मिलेगा। यह गीता और गांधी के विचारों की पुनःस्थापना से ही सम्भव है।

उक्त बातें सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति आर.सी.लोहाटी ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 57वें राष्ट्रीय अधिवेशन में कही। तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित एबीवीपी के अधिवेशन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि देश के वर्तमान चुनौतियों व समस्याओं के लिए राजनितिक महत्वाकांक्षा व अनीति को जिम्मेदार बताया। उन्होंने इसके समाधान के लिए संस्कार ,संस्कृति व संस्कृत की आवश्यकता पर जोर दिया।

पूर्व मुख्य न्यायाधीश ने वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों पर कटाक्ष करते हुए कहा कि राजनीति के साथ जब महत्वाकांक्षा व व्यक्तिगत स्वार्थ जुड़ जाता है तो राजनीति गंदी हो जाती है। इसके सुधार के लिए युवाओं को आगे आना होगा। ऐसे में विद्यार्थी परिषद जैसे संगठन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है।

अधिवेशन के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. मिलिन्द मराठे ने राष्ट्रीय पुनःनिर्माण के व्यापक लक्ष्य को लेकर कार्य करने वाले विद्यार्थी

परिषद की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि देश में जब–जब चुनौतियां आयी हैं, तब–तब विद्यार्थी परिषद ने हताश व निराश समाज में नई ऊर्जा का संचार किया है। बात चाहे बांग्लादेशी घुसपैठ की हो या भ्रष्टाचार की, सभी समस्याओं से लड़ने हेतु परिषद के कार्यकर्ता सड़क से लेकर संसद तक सदैव तत्पर रहे हैं। उन्होंने देश के युवाओं से अपील की है कि वह अपनी ऊर्जा व शक्ति को राष्ट्रहित में लगाए।

श्री मराठे ने कहा, 'छात्र कल का नहीं आज का नागरिक है, इसलिए उसकी जिम्मेदारी समाज के प्रति दोगुनी हो जाती है। एक विद्यार्थी के नाते और दूसरा नागरिक के नाते। समाज में परिवर्तन तभी लाया जा सकता है जब व्यक्तिगत जीवन में सकरात्मक परिवर्तन हो। व्यक्ति निर्माण इसका माध्यम है और परिषद पिछले 63 वर्षों से इस दिशा में कार्य कर रहें हैं।'

श्रीमराठे ने संस्कारित,संगठित व राष्ट्र भाव से कार्य करने वाले परिषद द्वारा हर समस्या के समाधान करने के संकल्प को दोहराया।

अनोखे व समर्पण भाव से निराश्रित बच्चों के बीच 'सुरमन पालना' के नाम से बाल आश्रम का संचालन करने वाली जयपुर की सुश्री मनन चतुर्वेदी को उद्घाटन कार्यक्रम में न्यायमूर्ति लोहाटी ने यशवंत राव केलकर पुरस्कार से सम्मानित किया।

इस अवसर पर सुश्री चतुर्वेदी ने सशक्त समाज की स्थापना के लिए स्त्री शक्ति को अपनी भावी पीढ़ी को संस्कारित व विकसित करने के भाव को जागृत करने हेतु आगे आने की आवश्यक्ता पर जोर दिया। उन्होंने उपस्थित कार्यकर्ताओं से समाज के दर्द को समझते हुए देश के सामाजिक चुनौतियों से लड़ने हेतु सदैव तत्पर रहने का आह्वाहन किया।

कार्यक्रम के दौरान विशेष रूप से दत्तात्रेय होसबाले, सुरेश सोनी, सुनील आम्बेकर,राजकुमार भाटिया, रविशंकर प्रसाद ,अतुल भाई कोठारी, वी.सुरेन्द्रम आदि विविध राजनीतिक व सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में स्वागत समिति के अध्यक्ष व दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल विजय कपूर, अधिवेशन संयोजिका डॉ. पायल मग्गों,राष्ट्रीय महामंत्री उमेश दत्त, प्रदेश अध्यक्ष डॉ. प्रवीण गर्ग, भारत भूषण व प्रदेश मंत्री रोहित चहल मंच पर उपस्थित थे।

उमेश दत्त

राष्टीय महामंत्री